वार्तालाप नं.465, औरी, नेपाल, दिनांक 15.12.07
Disc.CD No.465, dated 15.12.07 at Owri, Nepal

समयः 00.15-04. 55

जिज्ञासुः बाबा, विजयमाला का आवाहन कैसे करें?

बाबाः माला हाथ में पकड़ो और कहो- आ जाओ-3। मक्खियों का छत्ता होता हैं। शहद की मक्खियाँ होती हैं ना? पूरे छत्ते का आह्वान कैसे किया जाता है? क्या करना पड़ता है? रानी मक्खी को पकड़ लो, तो सारा छत्ता तैयार अपने आप आ जायेगा। ऐसे ही मुरली में बोला है कि शहद की मक्खियों की एक रानी होती है। एक रानी मक्खी निकलती है तो सारा झाड़ उसके पीछे जाता है। तो बुद्धियोग से, बुद्धिरूपी हाथ से उस एक ही रानी मक्खी को पकड़ लिया जाये तो सारा झाड़ उसके पीछे-2 अपने आप आ जायेगा। अच्छा रुद्रमाला के मणके जो हैं, उनमें मुखिया को पकड़ लिया जाए तो सारा झा क्यों नहीं इकठ्ठा हो जाता? क्योंकि ये जन्म-जन्मांतर के राजायें हैं। ये राजायें हिस्ट्री में आपस में लड़ाई लड़ते रहे। तो ये एक नहीं होते हैं। क्यों नहीं एक होते? कोई कारण होगा।

Time: 00.15-04.55
Student: Baba, how should we summon the rosary of victory (*Vijaymala*)?
Baba: (jokingly) Hold the rosary in your hand and say: come, come, come! There is a bee hive (for example); there are honey bees, aren't there? How is the entire bee-hive summoned? What do you have to do? Catch the Queen Bee; then the entire bee-hive will come automatically. Similarly, it has been said in a *Murli*, there is a queen bee of honey-bees. When one Queen Bee emerges, the entire tree (i.e. hive) follows her. So, if you catch hold of only that one Queen Bee with your connection of the intellect, through the hand-like intellect, the entire tree will follow her automatically. OK, why doesn't the entire tree come together if we catch hold of the chief among the beads of the rosary of *Rudra (Rudramala)*? It is because they are kings of many births. These kings continued to fight battles with each other in the history. So, they do not unite. Why don't they unite? There must be some reason.

राजायें ज्यादा विकारी बने हैं या रानियाँ ज्यादा विकारी बनी? राजायें बहुत विकारी बने। जहाँ विकारी होते हैं, व्यभिचारी होते हैं तो वैश्यालय बनता है या शिवालय बनता है? वैश्यालय बनता है। तो ये, न एक होंगे और न एक होने देंगे। ये तो विघन डालने वाले हैं। इसलिए किसका आह्वान करो? रानी मक्खी का आह्वान करो, वो सबको एक में बाँध लेगी। प्योरिटी से युनिटी बनती है। जहाँ इम्प्योरिटी होती है या जिसमें भी इम्प्योरिटी होगी वो युनिटी नहीं बनाय सकते। एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाये। नहीं तो सीता का नाम पहले और राम का नाम बाद में क्यों आता? राधा का नाम पहले और कृष्ण का नाम बाद में क्यों आता?

Have the kings become more vicious or the queens become more vicious? The kings became more vicious. Where there are vicious people, where there are adulterous people, does that place become a brothel *(Vaishyalay)* or does it become *Shivalay* (a temple of Shiv)? It

becomes a brothel. So, they (the kings) will neither unite nor allow others to unite. They are the ones who bring about dissolution. That is why whom should you summon? Summon the Queen bee; she will unite everyone. Purity leads to unity. Where there is impurity or whoever has impurity cannot create unity. 'If we try to accomplish one thing, we accomplish everything and if we try to accomplish everything, everything is lost' *(eke saadhe sab sadhe, sab sadhe sab jaye)*. Otherwise, why is Sita's name uttered first and the name of Ram uttered later? Why is Radha's name uttered first and Krishna's name later?

जिज्ञासुः बाबा, लक्ष्मी को पहले और नारायण को बाद में तो फिर शंकर पहले और पार्वती बाद में क्यों आती है?

बाबाः वो तो भगवान है। नारायण कोई भगवान थोड़े ही है, वो तो देवता है। ये देवताओं के नाम है, राधा-कृष्ण, सीता–राम, लक्ष्मी–नारायण। और शंकर क्या है? शंकर तो भगवान का रूप है। देव-2 महादेव कहा जाता है। एक ही तो रूप है भगवान का प्रैक्टिकल में, दूसरा तो कोई भगवान का रूप ही नहीं है। इसलिये तो शंकर का नाम शिव के साथ जोड़ा गया है। नहीं तो ब्रह्माकुमारियों से पूछो- तुम कहते तो हो शिव शंकर अलग-2 है। फिर शिव-शंकर को एक क्यों कर दिया? जवाब मिलेगा? जवाब उनके पास है ही नहीं। तुम्हारे पास तो जवाब है कि शिव शंकर को अलग-2 होते हुए भी शिव शंकर को भक्तिमार्ग में इसलिए मिला दिया कि शंकर ने ऐसा पुरुषार्थ किया एक बाप को याद करने का कि उनकी आत्मा जैसे परमात्मा के सब संकल्पों में लीन हो गई, एक हो गई, एकाकार हो गई। इसलिए शंकर ही शिव समान बन गया। अथवा यूँ कहें कि बाप शिव ने आ करके बच्चे को आप समान बनाय लिया।

Student: Baba, Lakshmi's name is [uttered] first, Narayan's name [is uttered] later on. So, why is Shankar's name uttered first and Parvati's name later on?

Baba: He is God. Narayan is not God, he is a deity. These are the names of the deities – Radha-Krishna, Sita-Ram, Lakshmi-Narayan. And what is Shankar? Shankar is the form of God. It is said *Dev-Dev-Mahadev* (highest among all the deities). There is only one form of God in practical. There is no other form of God at all. That is why Shankar's name is suffixed to Shiv. Otherwise, if you ask the Brahmakumaris, You say that Shiv and Shankar are different. Then why are [the names of] Shiv and Shankar mixed-up? Will you get a reply? They do not have a reply at all. You have the reply, that despite Shiv and Shankar being separate, Shiv and Shankar have been mixed up in the path of *bhakti* because Shankar did such *purusharth* (special effort for the soul) to remember the One Father that his soul merged in all the thoughts of the Supreme Soul; it became one [with the thoughts of God]; it became one and the same. That is why Shankar himself became equal to Shiv. Or we can say that the Father Shiv came and made the child equal to Himself.

समयः 05.00-05.40

जिज्ञासुः बाबा, जैसे बोला ना, रूद्रमाला के मणके जितने हैं वो जन्म-जन्म के राजायें हैं और उनको कहा कि जन्म-जन्म की रानी है। फिर ये भी कहते है कि एक जन्म स्त्री का और एक जन्म पुरुष का है। फिर ये कैसे? दोनों हिसाब कैसे होगा?

बाबाः जब वो राजा बने तब वो रानी नहीं बन सकती?

जिज्ञासुः नहीं वो जन्म-जन्म की रानी...

बाबाः हाँ तो वो जब राजा बने तब वो रानी नहीं बन सकती क्या?

जिज्ञासुः जन्म-2 के राजा ये पुरुष हुए तो.....

बाबाः तो 84 जन्म कोई राजा थोड़े ही होता है। कोई जन्म में राजा होगा, कोई जन्म में साहूकार भी होगा। हर जन्म में कोई राजा बनता है क्या? हर जन्म में राजा थोड़े ही बनता है।

Time: 05.00-05.40
Student: Baba, just as it has been said that all the beads of the *Rudramala* are kings of many births, hasn't it? And they (i.e. the *Vijaymala*) are said to be queens of many births. Then it is also said that they take one birth as a female and one birth as a male. So, how is it so? How are both the things possible? ….
Baba: When they (i.e. *Rudramala*) become kings, can't they become queens?
Student: No, they (the beads of the *Vijaymala*) are queens of many births……..
Baba: Yes, so when they (the beads of the *Rudramala*) became kings, can't they become queens?
Student: Those who become kings for many births are males….
Baba: So, does anyone remain a king for 84 births? He may be a king in one birth and he may also be a prosperous person in some other birth. Does anyone become king in every birth? Anyone does not become a king in every birth?

समयः 07.25-10.50

जिज्ञासुः बाबा, अंत में सभी आत्मायें पुरुषार्थी बच्चे अपने-अपने पार्ट को महसूस भी करेंगे और उसमें संतुष्ट भी रहेंगे।

बाबाः हाँ, ठीक है।

जिज्ञासुः अभी पुरुषार्थी स्टेज में उसको अभी से ही महसूस करने के लिए क्या सहज विधि है?

बाबाः आत्मा बनेंगे तब ही तो महसूस करेंगे। जब तक वर्तमान जीवन का देहभान, जो देह है उसका भान है तब तक आत्मा के अनेक जन्मों को कैसे जान लेंगे? आत्मिक स्थिति में आवेंगे, बीज बनेंगे तो बीज देखने से झाड़ समझ में आ जावेगा। अब बीज ही नहीं बने। पहले तो बीज समझ में आवे कि हमारी आत्मा रूपी बीज कौनसी कैटेगिरी का है? आम का है, बबूल का है, बैंगन का है, कौनसा है? ये ही समझ में नहीं आ रहा है।

Time: 07.25-10.50
Student: Baba, in the end all the souls, all the children who are making *purusharth* (special effort for the soul) will realize as well as feel contended with their parts.
Baba: Yes, this is correct.
Student: What is the easy way to realize it in the *purusharthi* stage from now itself?
Baba: You will realize only when you become a soul. Until the body consciousness of the present birth, the consciousness of the body is there, how will you know the many births of the soul? When you achieve the soul conscious stage, when you become a seed, then, by looking at the seed you will understand [about] the tree. Now you have not become a seed at all. First you should understand the seed: our seed-form soul is of which category? Whether it

is of mango (*aam*), whether it is of acacia (*babool*), whether it is of brinjal (*baingan*)? You do not understand this itself.

जिज्ञासु: सहज आत्मिक स्थिति को प्राप्त करने के लिए .....

बाबा: हाँ जी। इसलिए बोला, आत्मा रूपी सुई की सारी क□ उतरने पर तुम □ायरेक्□ बाप से सीखोगे। तो बेसिक नॉलेज जो बिन्दु को याद करने की थी कि हम आत्मा ज्योतिबिन्दु, हमारा बाप ज्योतिबिन्दु; इस बेसिक नॉलेज में रमण करते-2 जिन्होंने, याद करते-2 अपने को बिन्दु बनाय लिया उनकी क□ जैसे उतर गई? बेसिकली। पूरी क□ नहीं उतरी, बेसिकली उतरी। वो बाप को पहचानते हैं और बाप से पढ़ाई पढ़ते हैं। फिर पढ़ाई चलती है ए□वांस।

Student: To achieve the soul conscious stage easily …..

Baba: Yes. That is why it has been said, When the entire rust of the needle-like soul is removed, you will learn directly from the Father. So, the basic knowledge of remembering the point : we souls are points of light, our Father is a point of light; those who made themselves a point while delighting in this basic knowledge, while remembering [in this way], it is as if their rust was removed; at the basic level (*basically*). The entire rust was not removed. It was removed at the basic level (*basically*). They recognize the Father and study the knowledge from the Father. Then the study of advance [knowledge] continues….

कि बिन्दु-2 आत्मा, हम ज्योतिबिन्दु है, बाप हमारा ज्योतिबिन्दु है - ये तो सामान्य नॉलेज हो गई। लेकिन हम ज्योतिबिन्दु आत्मा कौनसी कै□गिरी की आत्मा है? ये कै□गिरी का तो पता चले। कै□गिरी पहले बाप की पता चलेगी या पहले अपनी पता चल जायेगी? पहले कै□गिरी बाप की पता चले। तो जो भी जन्म मरण के चक्र में आने वाली आत्मायें हैं उनकी कितनी कै□गिरीज है मुख्य-2? 10 कै□गरीज हैं॥ एक नास्तिक और बाकी आस्तिक, नम्बरवार, भगवान को मानने वाले। तो हम किस कै□गिरी में हैं? झाड़ के चित्र में दिखा तो दिया, बता तो दिया कि देवताओं की कै□गिरी ये हैं, उनमें सहनशक्ति का विशेष गुण होगा। क्षत्रियों की कै□गिरी ये है। सहनशक्ति होगी जरूर लेकिन वो सामना करने की शक्ति का पहले उपयोग करेंगे। इस्लामी.....

We are point souls, we are points of light, our Father is a point of light', this is general knowledge. But I, a point of light soul belong to which category? This category should be known. Will we first know the category of our Father or of our self? First we should know the category of the Father. So how many categories there are of all those souls who come in the cycle of birth and death, mainly? ? There are 10 categories. One is atheist and the rest are theists, number wise, who believe in God. So, to which category do we belong? It has already been shown in the picture of the [*Kalpa*] Tree; it has already been mentioned: this is the category of deities; they will have the special virtue of tolerance. This is the category of *Kshatriyas* (warriors). [They] will certainly have tolerance, but first they will use the power to face. The people of Islam ….

जिज्ञासुः सामना कैसे बाबा? सामना कैसे करेंगे?

बाबाः सागर कैसे सामना करता है लहरों से? तूफान आता है, सागर कैसे सामना करता है?

जिज्ञासुः शांत रहता है अन्दर से।

बाबाः अन्दर से तो शांत है लेकिन सामना करता है कि नहीं? ऊँची-2 लहरे ज्ञान की आती है, सामना करता है। तूफान आने दो। तूफान क्या करेंगे? ज्ञान के सामने सब तूफान ठंडे हो जाते हैं।

Student: Baba, how will they face? How will they face?
Baba: How does the ocean face the waves? When a cyclone comes, how does the ocean face? **Student**: It remains peaceful within.
Baba: It is calm from within, but does it confront or not? High waves of knowledge come; it faces them. Let the cyclone come. What will cyclones do? All the cyclones become calm in front of knowledge.

<u>समयः 26.14-31. 12</u>

जिज्ञासुः जैसे बाबा ने बोला है मुरली में कि बाप और घर को याद....

बाबाः .....बाप को याद करो, घर को याद करो, स्वर्ग को याद करो।

जिज्ञासुः तो बाप को याद करे और घर जैसे ... शरीर को याद करें, तो ये भी योग माना जायेगा? जैसे जिस शरीर में शिवबाबा.....

Time: 26.14-31.12
Student: For example, Baba has said in the *Murli* , remember the Father and the home….
Baba:……Remember the Father, remember the home, remember heaven.
Student: So, to remember the Father and the home for example…..if we remember the body, will it be considered to be *yog* as well? For example, the body in which Shivbaba……

बाबाः विनाशी को याद करना है या अविनाशी को याद करना है?

जिज्ञासुः अविनाशी को याद करना है।

बाबाः अविनाशी को याद करने से फायदा है और विनाशी को याद करने से तो फायदा नहीं है। तो जिस तन में, मुकर्रर रथ में बाप आते हैं, बाप के रूप में पार्ट बजाते हैं, सदगुरु का पार्ट बजाते हैं वो तन विनाशी है या अविनाशी है? (किसी ने उत्तर दिया।) आप क्यों बोलते हैं?

जिज्ञासुः विनाशी है।

बाबाः विनाशी है! सुनो , ये ज्ञान लिया है अभी। आपका ज्ञान ही अधूरा है अभी। जिस तन में मुकर्रर रथ में बाप पार्ट बजाता है शिव, वो तन विनाशी है या अविनाशी है? (किसी ने फिर से उत्तर दे दिया।) अरे, फिर बोल दिया। मजबूर है आदत से। आप बताइये।

जिज्ञासुः वो तो नर से नारायण बन जाते हैं।

बाबाः तो विनाशी हुआ?

जिज्ञासु: अविनाशी हुआ।

बाबा: फिर? कभी विनाशी बताते हैं, कभी अविनाशी बताते हैं। एक बात पक्की करो ना। जिस तन में बाप आते हैं, शिव बाप वो मुकर्रर रथ विनाशी है या अविनाशी है?

जिज्ञासु: अविनाशी है।

बाबा: तो अविनाशी को याद करने से हम क्या बनेंगे विनाशी बनेंगे या अविनाशी बनेंगे?

जिज्ञासु: अविनाशी बनेंगे।

बाबा: तो याद करना खराब है?

Baba: Should we remember the perishable one or the imperishable one?
Student: We have to remember the imperishable one.
Baba: There is benefit in remembering the imperishable one and there is no benefit in remembering the perishable one. So, the body, the permanent chariot in which the Father plays a part in the form of the Father when He comes, plays the part of a *Sadguru*; is that body perishable or imperishable? (Someone replied.) Why do you speak?
Student: It is perishable.
Baba: It is perishable! [Just] hear, this is the knowledge that she has obtained [till] now. (To the student:) Your knowledge itself is incomplete now. The body, the permanent chariot in which the Father Shiv plays a part, is it perishable or imperishable? (Someone replied once again.) *Arey*, you spoke once again. You are compelled by your habit. (To the student who questioned) please speak.
Student: He transforms from a man to Narayan.
Baba: So, is he perishable?
Student: He is imperishable.
Baba: Then? Sometimes you call him perishable and sometimes you call him imperishable. Be firm about one thing, won't you? The body in which the Father, the Father Shiv comes, is that permanent chariot perishable or imperishable?
Student: It is imperishable.
Baba: So, what will we become by remembering the imperishable one, will we become perishable or imperishable?
Student: We will become imperishable.
Baba: So, is it bad to remember?

जिज्ञासु: तो यही पूछ रहे हैं....

बाबा: क्यों पूछ रहे हैं? कुछ शक, संशय है तब ही तो पूछ रहे हैं।

जिज्ञासु: जैसे बाबा कहीं-2 बोल देते हैं ना साकार में निराकार को याद करो।

बाबा: ठीक है।

जिज्ञासु: तो जैसे साकार में निराकार को याद कर रहे हैं और निराकार याद न आये और साकार को याद करें तो ये योग माना जायेगा?

बाबा: साकार को सिर्फ याद करेंगे तो योग कठिन हो जायेगा थोड़ा। क्या? जो साकार को सिर्फ याद करेंगे तो कठिनाई हो जावेगी। साकार में निराकार को याद करेंगे तो सहज हो जावेगा।

Student: This is what I am asking….
Baba: Why are you asking? You have some doubt; only then are you asking.
Student: For example, sometimes Baba says 'remember the incorporeal one within the corporeal one', doesn't He?
Baba: It is correct.
Student: If we are remembering the incorporeal one within the corporeal one and if we are unable to remember the incorporeal one and if we remember the corporeal one, will it be considered to be *yog*?
Baba: If we remember just the corporeal one, then *yog* will become a bit difficult. What? It will become difficult if you remember only the corporeal one. If you remember the incorporeal one within the corporeal one, then it will become easy.

जिज्ञासु: बाबा, बोला है केवल खाली साकार को याद करेंगे तो पतित बन पड़ेंगे।
बाबा: नहीं। साकार को याद किया तो उतना पुरुषार्थ ही नहीं कर पायेंगे। क्या? चैतन्य को याद करेंगे या जड़ को याद करेंगे? चैतन्य को निकाल दो, शिव को निकाल दो; अच्छा ब्रह्मा में से शिव को निकाल दो। ब्रह्मा सहनशक्ति धारण कर सकता था? शिव ने प्रवेश किया तब ही तो सहनशक्ति इतनी धारण की। 63 जन्मों में वो सहनशक्ति धारण करके दिखा देता। ऐसे ही राम की आत्मा में से, राम के व्यक्तित्व में से शिव को अलग कर दो। शंकर वाली आत्मा वो कार्य करके दिखा सकेगी? नहीं दिखा सकती। इसलिए अगर सिर्फ साकार को याद किया तो भी ठीक नहीं है। हमारी प्रवृत्ति की याद है या निवृत्ति मार्ग की याद है? (किसी ने कहा: प्रवृत्तिमार्ग।) तो ये भी तो प्रवृत्ति है। आत्मा को भी याद करना और साकार को भी याद करना। अगर आत्मा को निकाल दिया तो वो तो जैसे मुर्दा को याद किया।
Student: Baba, it has been said that if we remember only the corporeal one, we will become sinful.
Baba: No. If you remember the corporeal one, you will not be able to do *purusharth* (special effort for the soul) to that extent at all. What? Will you remember the living one or the non-living one? If you remove the living one, if you remove Shiv; OK, if you remove Shiv from Brahma, could Brahma have been able to inculcate tolerance? He inculcated so much tolerance only when Shiv entered him. [Otherwise] He could have displayed that tolerance in 63 births. Similarly, if you separate Shiv from the soul of Ram, from the personality of Ram, will the soul of Shankar be able to perform that task? It cannot. This is why it is not correct even if you remember just the corporeal one. Is our remembrance a remembrance of the path of household or of the path of renunciation? (Someone said – the path of household.) So, this is also a household. Remember the soul as well as the corporeal one. If you removed the soul then it is as if you remembered the corpse.

जिस तन की हम बात कर रहे हैं वो तन अभी सम्पन्न है या अभी बच्चों के संग के रंग में आता है?
जिज्ञासु: संग के रंग में आता है।
बाबा: एक शिव है जो संग के रंग में नहीं आता। बाकी राम वाली आत्मा को संग का रंग लगता है या नहीं लगता है? संग का रंग लगता है तो अवस्था नीचे जायेगी। भल ये बात

जरूर है कि सुप्रीम सोल उसमें प्रवेश है इसलिए जल्दी कवर कर लेगा। लेकिन कुछ समय के लिए अवस्था तो नीचे-ऊपर होती है ना? बाप अकेला वापस नहीं जा सकता। जा सकता है? अव्यक्त वाणी में तो बोला है- बापदादा चाहे तो वापस जा सकते हैं लेकिन बच्चों को छोड़ के चले जायेंगे क्या? इसलिए प्रजापिता वाली आत्मा का तो ये पार्ट है कि 500-700 करोड़ जो भी मनुष्यात्मायें हैं, जब तक सारी ही मनुष्यात्मायें सम्पन्न स्टेज न प्राप्त कर ले तब तक वो आत्मा वापस नहीं जा सकती। जिम्मेवारी है उसकी। तो संग के रंग में उसे आना ही पड़ेगा।

The body about which we are talking now, is it a perfect body or does he become colored now by the company of the children?
Student: He is influenced by the colour of the company.
Baba: It is [only] one Shiv who is not influenced by the colour of the company. As for the rest, is the soul of Ram coloured by the company or not? When he is coloured by the company, the stage will go down. Although it is true that the Supreme Soul has entered Him, that is why he will cover up soon, but the stage goes up and down for some time, does it not? The Father cannot go back alone. Can He? It has been said in *Avyakta Vani*, Bapdada can go back if they wish. But will they leave the children and go? That is why, it is the role of the soul of Prajapita that until all the 5-7 billion human souls achieve the perfect stage; that soul cannot go back [to the Supreme Abode]. It is his responsibility. So, he will have to come in the colour of the company.

समयः 31.15-31.45

जिज्ञासुः बाबा, आत्मिक दृष्टि नहीं बनती, शरीर पे बहुत (दृष्टि) जाता है। क्रोध ज्यादा सताता है। तो उसके लिए बाबा....?

बाबाः तो ऐसे का संग करना शुरु कर दो जिसको क्रोध न आता हो।

जिज्ञासुः बाबा के संग रहे।

बाबाः हाँ। बाबा को तो इतना क्रोध आता है कि सारे दुनिया को ही भस्म कर देगा।

Time: 31.15-31.45
Student: Baba, I am not able to develop a soul conscious vision. (My vision) goes a lot towards the body. Anger troubles me a lot. So Baba, for that ……
Baba: So, start keeping the company of such a person who does not become angry.
Student: Shall I be in Baba's company?
Baba: Yes. (Jokingly) Baba becomes so angry that he will burn the entire world into ashes.
……..……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.